भजन

तर्ज–ये माना मेरी जां

ये माना झगड़कर,है खेल हमने मांगा
ये दुनिया हमें रास आयी नही है
ये दुनिया भी झूठी,दुनिया वाले भी झूठे
किसी के दिलों में सच्चाई नही है

1–तन के ये उजले,मन के ये काले,ऐसे फरेबी ये दुनिया वाले
देते है धोखा अपने खुदा को,इनके लिए दोजख बनायी गयी है

2–डूब रही थी आके निकाला,तेरी थी तूने आके संभाला
तेरे हुक्म से बंया कर रही हूं,नासूत के तन में दम तो नही है

3–जहर जिमी से अब तो उठा लो,प्राणों के प्रीतम अब तो बचालो
निशां सब कयामत के पूरे हुए है,क्या अब भी कयामत आयी नही है